बड़ों का बचपन

टैक्स्ट बुक कमेटी दिल्ली के पत्र-संख्या टी० बी० सी०/८०० दिनांक
१३-६-५५ द्वारा दिल्ली राज्य के स्कूलों की तीसरी कक्षा के
कक्षा-पुस्तकालय के लिए स्वीकृत पुस्तक

बड़ों का बचपन

लेखक
सन्तराम वत्स्य

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

१९६१
तीसरा संस्करण

मूल्य :
४० नए पैसे

मुद्रक
बालकृष्ण, एम० ए०
युगान्तर प्रेस, इफ़रित पुल,
दिल्ली

सूची

विषय		पृष्ठ
१. 'पहला पाठ'	...	५
२. सच्चा सौदा	...	७
३. सजा का अधिकारी कौन ?	...	१०
४. उचित बँटवारा	...	१२
५. सच्चा बालक	...	१३
६. साथियों की सहायता	....	१६
७. दीन-दुखियों का सेवक	...	१८
८. सदा सच बोलो	...	२०
९. साहस का पुतला	...	२२
१०. अपना सम्मान रखो	...	२४
११. सच्चा साथी	...	२६
१२. भोला बालक	...	२९

दो शब्द

इस पुस्तक में भारत के कुछ महापुरुषों के बचपन की रोचक घटनाएं दी गई हैं। यों तो बड़े लोगों की पूरी की पूरी जीवन-कथा बड़ी रोचक और पाठक के मन को ऊँचा उठाने वाली होती है, किन्तु कुछ महापुरुषों के बचपन की कोई-कोई घटना ऐसी महत्त्वपूर्ण होती है कि उसे पढ़कर हमें यह संकेत मिलता है कि उस व्यक्ति में महानता के बीज बचपन में ही विद्यमान थे। उन महान् पुरुषों की जीवनी पर यह कहावत अक्षरशः चरितार्थ होती है कि 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात।'

आशा है महापुरुषों के बचपन की इन घटनाओं का वर्णन पढ़कर हमारे बच्चों को प्रेरणा मिलेगी।

वे सम्भवतः अपने को परखने, जांचने और जानने का प्रयत्न करेंगे। उनके अपने जीवन में भी शायद कभी ऐसी घटनाएँ घटती रही हों या भविष्य में घटें जैसी कि इस पुस्तक में दी गई हैं। सिंह के बच्चे के लिए यह जान लेना काफी होता है कि वह सिंह का बच्चा है। इस पुस्तक को पढ़कर हमारे होनहार बालक अपने को पहचानने का और परिणाम-स्वरूप अपने को महान् बनाने का प्रयत्न कर सकेंगे।

प्रत्येक बच्चे में कोई न कोई महान् गुण होता है। परन्तु माता-पिता अध्यापक तथा अन्य लोगों को उसके गुण का पता नहीं होता। प्रोत्साहन न मिलने से बहुत से होनहार बच्चे महानता की सीढ़ी पर चढ़ने से रह जाते हैं। यदि घर के बड़े-बूढ़ों को इस पुस्तक के पढ़ने का अवसर मिले तो आशा है वे इसे पढ़कर अपने बच्चों में भी महानता का बीज ढूंढने का प्रयत्न करेंगे और उन्हें महान् बनाने में सहायता देंगे।

पहला पाठ

नई पाठशाला खुली थी। आज पढ़ाई का पहला ही दिन था। गुरु जी ने पहला पाठ पढ़ाया—"सदा सच बोलो।"

सभी लड़कों ने पाठ पढ़ा और याद करने लगे। सबने पाठ याद करके गुरु जी को सुना दिया।

पर एक लड़के ने कहा—"गुरु जी, मुझे अभी पाठ याद नहीं हुआ।"

गुरु जी ने कहा—"कोई बात नहीं, तुम कल सुना देना।" दूसरे दिन गुरु जी ने उसे पाठ सुनाने को कहा। उसने फिर कह दिया, "गुरु जी, अभी पाठ याद नहीं हुआ।"

तीसरे दिन फिर यही बात हुई। अब तो गुरु जी को क्रोध आ गया। वे भड़क कर बोले—

"सभी लड़कों ने पहले ही दिन पाठ सुना दिया था। और तुम्हें तीन दिनों में भी याद नहीं हुआ। बात क्या है? क्या तुम्हारा मन पढ़ने में नहीं लगता? एक दिन और देखता हूँ। अगर कल तुमने पाठ नहीं सुनाया तो ठीक न होगा।"

बालक फिर अपना पाठ याद करने लगा—"सदा सच बोलो, सदा सच बोलो।"

अगले दिन बालक फिर पाठ न सुना सका। जब उससे पूछते तो वह कह देता—अभी याद नहीं हुआ है। इसी तरह सात दिन बीत गये।

आठवें दिन फिर गुरु जी ने पूछा तो फिर वही उत्तर मिला। आज गुरु जी को क्रोध आ गया। वे इस बालक को पीटना ही चाहते थे कि बालक कहने लगा—"सदा सच बोलो"... गुरु जी बीच में ही बोल पड़े—"हाँ-हाँ, ठीक तो कह रहे हो, हो तो गया याद। तुम तो कह रहे थे कि याद नहीं हुआ।"

बालक ने कहा—"गुरु जी, जीवन भर सदा सच बोल सकूँगा या नहीं, यह अभी नहीं कह सकता।"

अब गुरु जी की समझ में आया कि बात क्या थी। यह बालक इस पाठ को अपने जीवन का पाठ बनाना चाहता था। बालक सच्चा था।

यह बालक बाद में सत्यवादी (सच बोलने वाला) युधिष्ठिर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

सच्चा सौदा

पिता ने बेटे को कुछ रुपये दिए और कहा कि पास वाली मंडी से कुछ माल खरीद लाओ। गाँव में रहकर ही कुछ वणज-व्यापार करो। और जब

बेटा चलने लगा तो समझाते हुए कहा—"बेटा काम जरा होशियारी से करना। सच्चा वा खरा सौदा खरीदना। कहीं ऐसा न हो कि लाभ के बदले हानि उठानी पड़े।" उन्होंने एक नौकर भी बेटे के साथ भेज दिया।

गाँव से कुछ दूर गए होंगे कि इन्हें कुछ साधु-सन्त मिल गए।

इनमें से एक बाबा जी ने पूछा—बच्चा, कहां जा रहे हो ?

लड़के ने कहा—मैं सौदा खरीदने जा रहा हूँ।

साधु ने कहा—बच्चा, साधु-सन्तों को भोजन कराओ। यह सबसे अच्छा सौदा है। धर्म की कमाई सब से अच्छी होती है। भूखों को भोजन देने से बहुत पुण्य होता है।

बात सच्ची थी, लड़के के मन में बैठ गई। उसने गाँठ से रुपये निकाले और अन्न खरीदकर साधुओं को बाँट दिया।

साधु भोजन करके ईश्वर-भजन करने लगे और लड़का आधे रास्ते से खाली हाथ, खाली गाँठ घर लौट आया।

जानते हो यह लड़का कौन था ?

यही लड़का बाद में गुरु नानक देव के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

आज भारत का बच्चा-बच्चा गुरु नानक देव जी का नाम बड़े आदर और श्रद्धा के साथ लेता है।

सज़ा का अधिकारी कौन ?

नरेन जितना पढ़ने-लिखने में तेज था उतना ही शरारत करने में भी। बात यह थी कि वह जिस पाठ को एक बार पढ़-सुन लेता, वह तुरन्त ही उसे याद हो जाता। इधर अध्यापक जी ने पढ़ाया और उधर उसे याद हो गया।

यही कारण था कि वह कक्षा में बैठा-बैठा भी या तो अपने साथियों को कोई कहानी सुनाता रहता या फिर कोई शरारत करता रहता।

एक दिन नरेन अपने सहपाठियों के साथ बातें कर रहा था। अध्यापक जी पढ़ा रहे थे। उन्होंने देख लिया कि कुछ लड़के बातें कर रहे हैं।

जो लड़के बातें कर रहे थे, उन्हें खड़ा करके अध्यापक जी ने पूछ लिया कि बताओ मैं क्या पढ़ा रहा था ?

सभी लड़के घबरा गए कि अब क्या बताएँ ? परन्तु नरेन ने झट बता दिया कि आप यह पढ़ा रहे थे।

अध्यापक जी ने समझा कि नरेन अवश्य सुन रहा होगा। नहीं तो बताता कैसे ? उन्होंने उसे तो बैठ जाने की आज्ञा दी और बाकी लड़कों को कहा कि तुम खड़े रहो। तुम बातें कर रहे थे। किन्तु नरेन ने जब देखा कि बातें करने वालों को खड़े होने की सजा मिली है तो वह भी उठकर खड़ा हो गया। इस पर अध्यापक जी ने कहा—नरेन ! तुम क्यों खड़े हो ? तुम्हें तो मैंने बैठ जाने को कहा था।

नरेन ने उत्तर दिया—किन्तु गुरु जी, बातें तो मैं ही कर रहा था। ये तो केवल सुन रहे थे। इस लिए मुझे भी सजा मिलनी चाहिए।

यह नरेन ही आगे जाकर भारत का नाम उज्ज्वल करने वाले स्वामी विवेकानन्द जी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

उचित बँटवारा

माँ ने बच्चे के हाथ पर बर्फी के दो टुकड़े रख कर कहा—एक तू खाले और एक नौकरानी के लड़के को दे दे।

बच्चे ने बड़ा टुकड़ा नौकरानी के लड़के को दे दिया और छोटा अपने आप खाने लगा। माँ देख रही थी। उसने टोका—अरे यह तुमने क्या किया? बड़ा टुकड़ा उसे क्यों दे दिया? वह तो तेरे लिए था।

बच्चे ने उत्तर दिया—माँ, तुम्हीं ने तो समझाया था कि ग़रीबों पर दया करनी चाहिए। मैंने वही तो किया। इसमें बुरा क्या हुआ?

माँ ने प्यार से बच्चे की पीठ थपथपाई। कहने लगी—बेटा, तुमने ठीक ही किया। जीवन भर इसी तरह ग़रीबों पर दया करना।

जानते हो यह बालक कौन था? यह बालक था रानाडे। भारत माँ के मस्तक को ऊँचा करने वाला। यह बड़ा होकर देश का बहुत बड़ा नेता बना।

सच्चा बालक

पाठशाला में लड़के पढ़ रहे थे। जब छुट्टी का समय हुआ तो अध्यापक जी ने सब को एक सवाल लिखाया और कहा कि इसे घर पर कर लाना। कल मैं इसे देखूँगा।

सवाल कुछ कठिन था। सब लड़कों ने घर पर निकालने का यत्न किया पर बेकार। किसी का भी उत्तर ठीक नहीं आया।

दूसरे दिन जब सब लड़के पाठशाला पहुँचे तो अध्यापक जी ने उत्तर दिखाने को कहा। सब लड़के अपनी-अपनी कापी लेकर खड़े हो गए। लेकिन यह क्या ? यहां तो किसी का भी उत्तर ठीक नहीं। कुछ बेचारे तो सवाल बिना निकाले ही आ गए थे।

सब से अन्त में एक लड़का खड़ा था। अध्यापक जी ने जब उसकी कापी देखी तो बहुत प्रसन्न हुए। उसका सवाल बिल्कुल ठीक था। अध्यापक महोदय सब लड़कों के सामने उसकी बड़ाई करने लगे। उन्होंने उस लड़के को कहा कि तुम सब से आगे बैठा करो।

पर न जाने क्यों—इस प्रकार अपनी बड़ाई होते देखकर लड़का उदास-सा हो गया। ज्यों-ज्यों अध्यापक महोदय उसकी बड़ाई करते गए त्यों-त्यों उसका चेहरा उदास होता गया। बात यहीं पर समाप्त नहीं हुई; वह लड़का अन्त में रोने लगा।

उसके रोने पर अध्यापक तथा सभी छात्रों को आश्चर्य हो रहा था। अध्यापक जी ने जब उससे रोने का कारण पूछा तो वह सिसकियाँ भरते हुए कहने लगा—गुरु जी, आप मेरी बड़ाई न करें।

मैं बड़ाई के योग्य नहीं हूँ । यह सवाल मैंने अपने आप नहीं निकाला है । इसे मैंने एक मित्र की सहायता से हल किया है ।

अध्यापक जी ने यह बात सुनी तो और भी प्रसन्न हुए । अब वे उस लड़के की सच्चाई की प्रशंसा करने लगे । उन्होंने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा कि तू एक दिन अपने देश का नाम उज्ज्वल करेगा ।

अध्यापक महोदय की बात सच्ची निकली । बड़ा होने पर वह अपने समय का भारत का सब से बड़ा नेता बना । उसका नाम था—गोपाल कृष्ण गोखले ।

साथियों की सहायता

एक लड़के ने अपने पिता जी से कहा—"पिता जी मुझे सात रुपए चाहिएँ।"

"सात रुपए ? क्या करोगे उनका ?" पिता ने आश्चर्य से पूछा।

लड़के ने उत्तर दिया—"एक बहुत जरूरी काम आ पड़ा है। पर आप को बताऊँगा नहीं।"

पिता जी चुप हो गए। उन्हें अपने बेटे पर पूरा-पूरा भरोसा था, इसलिए झट जेब से सात रुपए निकाल कर बेटे के हाथ पर रख दिए। रुपए तो निकालकर दे दिए पर मन में सोचा कि पता लगाना चाहिए कि यह इन रुपयों का क्या करता है। उन्होंने एक नौकर को बुलाकर उसके कान में चुपके-से कह दिया कि तुम इसका पीछा करो और देखो कि यह इन रुपयों का क्या करता है।

नौकर छाया की तरह लड़के के पीछे लग गया। जिधर लड़का जाता, यह पीछे-पीछे चल पड़ता।

आखिर लड़का अपने एक साथी के घर गया

और उसे लेकर किताबों की दुकान पर जा पहुँचा । नौकर यह सब देखता रहा । वह दुकान से कुछ दूर खड़ा होकर देखने लगा । उस लड़के ने उन रुपयों से कुछ किताबें खरीदकर उस लड़के को दे दीं । बाकी जितने पैसे बचे, उनसे एक जोड़ी चप्पल खरीद कर उसे दे दी ।

नौकर ने सारी बात वापिस आकर मालिक को बता दी । लड़के का पिता बहुत दयालु था । जब उसने अपने बेटे की दयालुता की बात सुनी तो उसको प्रसन्नता का ठिकाना न रहा ।

क्या तुम इस लड़के का नाम जानते हो ?

चित्तरंजन दास ! चित्तरंज दास सचमुच बहुत दयालु थे । बचपन से लेकर जीवन भर वे निर्धनों की सहायता करते रहे । इन्हें भारत के महान् व्यक्तियों में गिना जाता है ।

दीन-दुखियों का सेवक

पाठशाला में छुट्टी हो चुकी थी। सब लड़के अपने-अपने घरों को जा रहे थे। मदन भी अपने घर की ओर जा रहा था। उसे रास्ते में एक कुत्ता मिला। बेचारा पागलों की तरह चऊँ-चऊँ करता कभी इधर और कभी उधर सिर पटक रहा था।

वास्तव में बात यह थी कि उस कुत्ते के कान के पास ही एक घाव था। उसमें कीड़े पड़ चुके थे। उन्हीं के मारे बेचारा परेशान था।

मदन ने कुत्ते की यह दशा देखी तो उसे बड़ी दया आई। वह दौड़ा-दौड़ा डाक्टर के पास गया। बोला—"डाक्टर जी, एक कुत्ता है! उसके कान के पास घाव हो गया है और उसमें कीड़े पड़ गए हैं। बेचारा दर्द के मारे छटपटाता फिरता है। कोई दवा दीजिए।"

डाक्टर ने दवा दे दी।

दवा लेकर मदन दौड़ा-दौड़ा उस कुत्ते के पास

पहुँचा। पाठशाला के कुछ और मित्र भी साथ हो लिये।

मदन ने एक बाँस में कपड़ा लपेटा। उसे दवा से तर किया और कुत्ते के घाव पर लगाना प्रारम्भ किया। पहले तो कुत्ता ज़ोर से गुर्राने और भौंकने लगा। मालूम होता था, काट खाएगा। पर मदन डरा नहीं, चुपचाप दवा लगाता रहा। दवा लगाने के बाद कुत्ते को आराम मालूम हुआ। अब वह पूँछ हिलाता हुआ मदन के पास आ गया।

कुत्ते पर ऐसी दया दिखाने वाला वह मदन कौन था भला ?

ये थे हमारे महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय।

उनके मन में सबके लिए दया थी। कुत्ते के लिए भी।

सदा सत्य बोलो

नगर में एक नाटक-मंडली आई। वह अच्छे नाटक दिखाती थी। मोहन भी अपने पिता जी के साथ नाटक देखने गया। उस दिन 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक दिखाया गया।

मोहन को यह नाटक बहुत अच्छा लगा।

उसके मन में यह बात जमकर बैठ गई कि चाहे

कितना ही दुःख क्यों न उठाना पड़े, सचाई को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

मोहन चाहता था, कि वह बार-बार इस नाटक को देखे। वह रात को सोता तो हरिश्चन्द्र के सपने आते।

मोहन ने सच्चाई के लिए हरिश्चन्द्र और उस की रानी को दुःख उठाते जो देखा तो उसकी आँखों में आँसू आ गये।

उस बालक ने बचपन में सोचा हुआ करके दिखा दिया। बड़े होकर उसने जीवन भर कभी झूठ नहीं बोला। यह बालक और कोई नहीं, महात्मा गाँधी ही थे।

साहस का पुतला

वह बचपन में ही बहुत बहादुर था। डर तो उसे छू तक नहीं गया था।

एक बार उसकी आँख में फोड़ा निकल आया। देहात में कोई डाक्टर तो था नहीं। एक गँवार हकीम था। वही उस गाँव वालों का डाक्टर था।

बालक को इस हकीम के पास ले गए। गँवार हकीम ने दवा बताई—

एक सलाख गरम करके फोड़े में भोंक दो। बस, फोड़ा एक ही दिन में ठीक हो जायेगा।

बालक जरा भर भी नहीं घबराया। झट तैयार हो गया। सलाख गरम की गई। भोंकने वाले ने उसे हाथ में लिया पर उसका दिल इस कोमल बालक को देखकर काँप गया। वह हिचकिचाने लगा।

इधर बालक देर होते देखकर झुंझला उठा। क्या देख रहे हो भाई, सलाख ठंडी होती जा रही

है। लाओ सलाख मुझे दो, तुमसे नहीं होता तो मैं खुद भोंक लूँ।

उस बालक की इस बात को सुनकर सब दंग रह गए।

वह इतना निडर, इतना साहसी बालक और कोई नहीं, सरदार वल्लभ भाई पटेल ही थे, जिन्हें 'लौह-पुरुष' अर्थात् 'लोहे जैसा कठोर' कहते थे।

अपना सम्मान रखो

उन दिनों भारत में अंग्रेजों का राज्य था। लोग उन से बहुत डरते थे। उनके विरुद्ध एक शब्द भी कोई नहीं बोल सकता था।

एक अंग्रेज लड़के ने कहा—"बंगाली लड़के बहुत कमीने होते हैं।"

दूसरे ने कहा—"मैं तो उन्हें जहाँ पाता हूँ, थप्पड़ जड़ देता हूँ।"

यह कटक के एक स्कूल की बात है। उसमें अधिकतर अंग्रेज लड़के पढ़ते थे। बंगाली लड़के थोड़े-से ही थे। आधी छुट्टी का समय था और लड़के खेल रहे थे। दो अंग्रेज बालक आपस में ये बातें कर रहे थे।

पास ही खड़े कुछ बंगाली लड़के उनकी यह बातें सुन रहे थे। वे सभी क्रोध से लाल-पीले हो उठे। उनमें से एक बंगाली लड़का गुस्से में भरा हुआ उन अंग्रेज लड़कों के पास गया और कड़ककर बोला—"मैं बंगाली हूँ। अब बताओ क्या कह रहे

थे ?" इस लड़के की तेज आवाज सुनकर वे दोनों लड़के घबराकर खड़े हो गए। किसी को उत्तर देने की हिम्मत न हुई। यह देख कर उस लड़के ने फिर ललकारा। फिर भी कोई उत्तर नहीं मिला।

यह बंगाली अंग्रेज लड़कों की ओर बढ़ा। "बंगाली कमीने होते हैं।" कहकर उसके गाल पर एक तमाचा जमा दिया। फिर वह दूसरे लड़के के पास गया और बोला—"तू बंगालियों को जहाँ पाता है, थप्पड़ जड़ देता है।" और पैर में पैर अड़ाकर उसे गिरा दिया।

सारा स्कूल 'युरोपियन मुरदाबाद' के नारों से गूँज उठा।

यह खबर बिजली की तरह सारे स्कूल में फैल गई। बात अध्यापकों को भी मालूम हो गई। पर वे करते क्या ? कहते क्या ?

यह लड़का और कोई नहीं, हमारा अमर नेता सुभाषचन्द्र बोस ही था।

सच्चा साथी

कबड्डी के खिलाड़ियों में हरकू की बड़ी धाक थी। वह जिस दल की ओर होता, उसी की जीत होती। सभी बालक मैदान में जमा हो गए और कबड्डी खेलने की तैयारी होने लगी। हरकू, राजू, गंगा, मोहनिया और श्यामू आदि एक ओर थे। रमजानी, सैयद, रामू, ननकू और प्यारे दूसरी ओर।

धीरे-धीरे रमजानी का दल हारने लगा। अब हरकू की बारी थी। कबड्डी में हरकू का लोहा सभी मानते थे। इसलिए हरकू कबड्डी-कबड्डी कहता आया तो सभी खिलाड़ी सावधान हो गए।

बात कुछ ऐसी हुई कि हरकू पकड़ में आ गया। वह छूटने का भरसक प्रयत्न कर रहा था। इसी खींचा-तानी में उसके कपड़े फट गए और वह धड़ाम करके जमीन पर गिर पड़ा। बेचारे के सिर में कंकड़ घुस गया और खून बहने लगा।

सिर से खून बहता देखा तो सभी बालक घबरा गए और अपने-अपने घर को भाग गए।

पर एक बालक वहीं खड़ा रहा। यह राजू था। राजू हरकू को होश में लाने का प्रयत्न करने लगा। थोड़ी देर बाद हरकू होश में आ गया। पर होश में आते ही वह रोने-चिल्लाने लगा। उसे सिर की चोट की इतनी परवाह नहीं थी, जितनी कपड़े फट जाने की। राजू ने उसे समझाया और अपने घर ले आया। घर आकर राजू ने अपनी माँ से कहा—"माँ-माँ, जानती हो यह मेरा मित्र हरकू है। खेल में बेचारे की कमीज़ फट गई है। इसे मेरी नई कमीज दे दो। और इसके सिर पर चोट लग गई है। ज़रा सिर की भी मरहमपट्टी कर दो।" माँ को राजू की यह बात अच्छी नहीं लगी। वह डपट कर बोली—"अरे, चमार के इस लड़के को घर पर क्यों ले आया? हटा इसे यहाँ से। खबरदार! जो आगे कभी इन गन्दे लड़कों के साथ खेला। इसे देने के लिए कपड़े कहाँ रखे हैं? और मैं इस अछूत की मरहम-पट्टी कैसे कर सकती हूँ?"

"तुम नहीं छूती हो, तो मैं ही पट्टी बाँध देता हूँ। पर भीतर से कपड़े तो ला दो। नहीं लाती तो मैं यह पहनी हुई कमीज उतार कर देता हूँ।"

और राजू ने हरकू को कपड़े दिलाकर ही चैन लिया।

आज के हमारे राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद को तुम जानते होगे। यही बचपन में हमारी कहानी के 'राजू' थे। बचपन से ही इनके मन में गरीबों के प्रति सहानुभूति रही है। और बचपन से ही इनके अन्दर दूसरों की सेवा करने का भाव रहा है।

भोला बालक

एक लड़का था। उसका नाम था नन्हा। नन्हा स्वभाव का बड़ा चंचल था। अगर नन्हा कभी रो रहा होता और कोई पूछ लेता कि नन्हे, क्या बात है, रो

क्यों रहे हो ? तुम्हें किस ने मारा ? जानते हो नन्हा उसे क्या उत्तर देता था ? वह पूछने वाले को कहता कि तुम्हीं ने मुझे मारा है। इस तरह वह हर पूछने वाले को दोषी ठहराता।

नन्हे के बचपन की एक मजेदार घटना है। एक बार नन्हे ने अपने पिता जी की मेज पर दो फाउण्टेन-पेन पड़े देखे। वे दोनों कलम उसने कई बार अपने पिता जी की जेब में लगे देखे थे। उसका जी भी करता था कि जेब में पेन लगाकर घूमे। आज उसने मन ही मन सोचा—पिता जी के लिए एक पेन काफी है। वे दोनों लेकर क्या करेंगे ? बस फिर क्या था ! नन्हे ने एक को उठाकर अपनी जेब में डाल ही लिया।

उसने सोचा था, पेन जेब में लगाकर शान से घूमूंगा। सब साथियों को दिखाऊँगा। किन्तु लेने के देने पड़ गए। सोचा कुछ था और हुआ कुछ। कुछ देर बाद जब पिता जी अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में लौटे और उनकी नजर मेज पर पड़ी तो एक पेन गायब था। वे सोचने लगे—एक पेन कहाँ गया ? नौकरों-चाकरों को बुलाकर पूछा। सभी ने इन्कार किया। किसी को कुछ पता ही नहीं था। फिर कोई क्या

बताता। नन्हे से पूछा गया। पर वह क्यों बताने लगा।

कलम उठाते समय उसे मालूम नहीं था कि वह चोरी कर रहा है। किन्तु अब तो उसे साफ़-साफ़ मालूम हो गया कि उसने पेन उठाकर अच्छा नहीं किया।

आखिर भेद खुल ही गया। पिता ने नन्हे की खूब पिटाई की। माँ ने आकर बड़ी कठिनाई से छुड़ाया। नन्हे की ऐसी पिटाई हुई कि बदन पर क्रीम और मल्हम लगाने पड़े।

रोते हुए नन्हे को माँ चुप कराने लगी। नन्हे का बदन तो दर्द के मारे दुःख रहा था और मन शर्म के मारे। वह सिसक-सिसककर रो रहा था।

माँ ने पुचकारते हुए कहा—"आज यह तुमने क्या किया? अच्छे लड़के तो कभी ऐसा नहीं करते।"

"माँ, मैंने तो यह सोचकर उठाया था कि पिता जी के लिए एक ही काफ़ी है। मैंने कोई चोरी थोड़े ही की थी।" नन्हे ने सिसकते-सिसकते कहा।

"बेटा, किसी की वस्तु को उसके मालिक से बिना पूछे उठा लेना ही तो चोरी कहलाता है। तुम्हें पेन लेना था तो मुझ से कहते। अपने पिता जी से कहते।"

"माँ, मुझ से भूल हुई। अब कभी बिना पूछे किसी की वस्तु नहीं उठाऊँगा।"

जानते हो अपनी भूल को मान लेने वाला यह नन्हा कौन है ?

नेहरू—हमारे प्रधान-मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू।

भारत माँ के इस सपूत के जीवन का इतिहास हमारे देश की स्वतन्त्रता की लड़ाई का इतिहास है।

★